डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

05.08.20

अरुण यह मधुमय देश हमारा
(जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न: 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' शीर्षक कविता का काव्यगत परिचय दीजिए।

उत्तर: हिन्दी काव्येतिहास में जयशंकर प्रसाद अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर हिन्दी साहित्य को अपनी लेखनी से बड़ा समृद्ध किया। उनकी कविता 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' उनके प्रसिद्ध नाटक चन्द्रगुप्त से यह उद्धृत है। इस नाटक की नायिका कार्नेलिया है भारतीय संस्कृति उसके सौंदर्य से अत्यधिक प्रभावित थी। उसका विवाह मगध के राजकुमार चंद्रगुप्त से हुआ था। वह अभारतीय होते हुए भी भारत के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट करती है।

'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता में कवि जयशंकर प्रसाद ने भारतवर्ष के बाह्य और आंतरिक गुणों को व्यक्त किया है इसके माध्यम से उसमें राष्ट्रीय भावना को मुखरित किया है। इस गीत एक ओर जहाँ भारत की लोकमंगलमय सभ्यता की सुमधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है, वहीं दूसरी ओर उसकी उदार सांस्कृतिक की व्यंजना की गयी है।

कार्नेलिया कहती है – हमारा प्रिय भारत अत्यन्त मधुर, मनोहर और प्रेममय है। इसके विस्तृत भू-भाग में अनंत व्यापी क्षितिज भी आश्रय लेता है। तात्पर्य यह कि सुदूर देशों के अपरिचित जन इसी पावन भूमि अवलम्ब ग्रहण करते हैं।

प्रभात कालीन स्वर्णिम किरणें वृक्षों के शिखरों पर नर्तन करती हैं। वायु के झोंकों से ऐसा प्रतीत होता है मानो उनकी मनोहर शाखायें नर्तन करती हों। प्रभात काल में अरुणोदय की लाल किरणें जीवन की सरस हरियाली पर मंगलमय कुंकुम बिखेरती हैं, चारों ओर फैली हरियाली में ये किरणें शुभ संकेतों का रोली फैला देती हैं।

P.T.O

(2)

"सरस तामरस गर्भ विभा पर
नाच रही तरु शिखा मनोहर
छिटका जीवन हरियाली पर
मंगल कुंकुम सारा।"

आगे कवि ने भारतवासियों की उदारता उनके प्रेम-सौहार्द संकेत देते हुए कहता है यहाँ केवल मनुष्य मात्र को ही आश्रय नहीं मिलता वरण पक्षीगण भी इसे प्यारा समझकर यहाँ आनंद से विश्राम करते हैं। कवि कहता है कि हंस या समय इसी देश अपना प्यारा नीड़ मानकर यहाँ सानंद निवास करते हैं। वे अपने इंद्रधनुषी पंखों को फैलाए चंदनगंधी हवाओं के सहारे उतरते हैं भारतीय आकाश के बादल प्यासी धरती के जीवन पर वैसे ही जल बरसाते हैं जैसे सहृदय व्यक्तियों की आँखें दूसरों के दुख से दुखी होकर करुणा के आँसू बहाते हैं। भारत के किनारों से अर्थात समुद्री लहरें टकराकर लौटि जाती हैं।

कवि प्रसाद ने उषा का मानवीकरण करते हुए कहते हुए उसे पनिहारिन का रूपक देते हैं। उषा पनिहारिन बनकर स्वर्णिम सूर्य बिम्ब-रूपी स्वर्ण-कुंभ लेकर प्रकट होती है और उसमें सुख-ऐश्वर्य के जल भरकर भारतवर्ष में उड़ेल देती है। उस समय रात भर भारत को सौन्दर्य निहारने वाले तारेगण अलसाए हुए ऊँघते से जान पड़ते हैं—

"हेमकुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे
मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा।"

इस प्रकार कवि ने अपनी उदात्त भावनाओं को व्यक्त करते हुए भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति प्राकृतिक सौंदर्य, भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि का गुण गान किया है। समग्रत: इस गीत में भारत भौगोलिक विस्तार एवं प्राकृतिक सौंदर्य की व्यंजना की गयी है।

U.G. B.A Part-I
Principal Hindi
'Arun yeh Madhumay Desh'